

HISTORY

राजा राममोहन रॉय: व्यक्तित्व एवं अंतिम चरण

राजेश सकवार

राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मंदसौर (मध्य प्रदेश), भारत

Published October 2026

Abstract

महापुरुषों का प्रादुर्भाव युग की आवश्यकता के अनुरूप ही होता है। उसी प्रकार राजाराममोहन राय भी अपनी युग की महत्ती आवश्यकता थे। अपने युग के जनक एवं संतति थे। ऐसे महान युगपुरुष के व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने भारत भूमि को नवीन दिशा दी। उन्होंने धर्म शिक्षा तथा समाज सुधार सहित सभी क्षेत्रों में अपने विचारों से नवीन जागृति का संचार किया। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व का एक-एक पहलू आज भी खोज की अपेक्षा रखता है।

वस्तुतः राममोहनराय महाननायक के व्यक्तित्व जीवन से संबंधित विशेषकर उनके जीवन के प्रारम्भिक चरण एवं कलकत्ता में व्यतीत किए काल के संबंधित अधिक विवरण का अभाव है। राजा राममोहनराय ने असंख्य लेख, पुस्तकें पत्र आदि लिखे किन्तु अपने जीवन के विषय में कुछ नहीं लिखा। बहुत कहने पर इंग्लैण्ड से कलकत्ता में मित्र मि. गार्डन को एक पत्र लिखा जो अत्यंत संक्षेप में उनके जीवन संबंधी कुछ तथ्यों को प्रस्तुत करता है। विलियम एडम तथा मोंटगुमरी मार्टिन जैसे घनिष्ठ लोगों ने उन पर लिखा है किन्तु वे विवरण उनके व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं पर ही प्रकाश डालते हैं। समूचे व्यक्तित्व पर नहीं। ब्रिस्टल जाने के बाद मेरी कारपेन्टर ने उनके जीवन का दैनिक ब्योरा लिखा है। जो 'लास्ट डेज इन इंग्लैण्ड ऑफ द राजा राममोहनराय' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इसमें उनके पुराने मित्र डॉ. लेंट कारपेन्टर ने उनकी जीवनी पर एक रेखांकन भी किया है। इस विवरण में बीमारी से लेकर अंतिम क्षण, अंतिम संस्कार निजी नौकरी के दुःख आदि अत्यंत भावनात्मक और सजीव रूप से चित्रित किया है।

Keywords: ब्रह्मसमाज; भावनात्मक; ब्राह्मणत्व; यज्ञोपवीत; गोधूलि बेला

1 शोध सारांश

राममोहनराय महाननायक के व्यक्तित्व जीवन से संबंधित विशेषकर उनके जीवन के प्रारम्भिक चरण एवं कलकत्ता में व्यतीत किए काल के संबंधित अधिक विवरण का अभाव है। राजा राममोहनराय ने असंख्य लेख, पुस्तकें पत्र आदि लिखे किन्तु अपने जीवन के विषय में कुछ नहीं लिखा। बहुत कहने पर इंग्लैण्ड से कलकत्ता में मित्र मि. गार्डन को एक पत्र लिखा जो अत्यंत संक्षेप में उनके जीवन संबंधी कुछ तथ्यों को प्रस्तुत करता है। विलियम एडम तथा मोंटगुमरी मार्टिन जैसे घनिष्ठ लोगों ने उन पर लिखा है किन्तु वे विवरण उनके व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं पर ही प्रकाश डालते हैं। समूचे व्यक्तित्व पर नहीं। ब्रिस्टल जाने के बाद मेरी कारपेन्टर ने उनके जीवन का दैनिक ब्योरा लिखा है। जो 'लास्ट डेज इन इंग्लैण्ड ऑफ द राजा राममोहनराय' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इसमें उनके पुराने मित्र डॉ. लेंट कारपेन्टर ने उनकी जीवनी पर एक रेखांकन भी किया है। इस विवरण में बीमारी से लेकर अंतिम क्षण, अंतिम संस्कार, निजी नौकरी के दुःख आदि अत्यंत भावनात्मक और सजीव रूप से चित्रित किया है। साथ ही सोफिया डाबसन कोलेट द्वारा लिखित 'लाइफ एण्ड लेटर्स ऑफ राजा राममोहनराय' नामक पुस्तक इस दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। शिवनाथ शास्त्री कृत 'हिस्ट्री ऑफ द ब्रह्मसमाज' में उनके आरम्भ के जीवन काल का चित्रण मिलता है। नगेन्द्रनाथ चटर्जी ने बंगला में महात्मा राममोहनराय के जीवन चरित शीर्षक से उनकी पहली पूरी जीवनी प्रकाशित की। उनके इंग्लैण्ड प्रवास, पर कुछ विवरण, उनके विदेशी मित्रों के लेखों, पत्रों एवं पुस्तकों में उपलब्ध है। बाद में भी उनके ऊपर कई पुस्तकें अंग्रेजी एवं बंगला में प्रकाशित हुई हैं। किन्तु हिन्दी भाषा में विस्तृत जानकारी का अभाव है। उनके ऊपर प्रकाशित सामग्री में उनके समाज सुधारक के कार्य, शिक्षा के प्रणेता एवं ब्रह्मसमाज पर सामग्री प्रकाशित हुई है। उनके व्यक्तिगत मानवीय रूप के चित्रण का अभाव है।

देवेन्द्रनाथ टैगोर ने सत्तर साल बाद इस विषय पर लिखा कि – ‘स्नान केबाद वे दस बजे भारतीय तरीकेसे पलथी मारकर बैठकर भोजन ग्रहण करते थे। यही उनका मुख्य भोजन होता। शाम तक और कुछ नहीं लेते थे। दोपहर दो बजे तक वे अपने काम में लगे रहते थे। दोपहर बाद वे अकसर अपने अंग्रेज मित्रों से मिलने जाते थे। रात का भोजन अकसर अंग्रेजी कायदे से बना मुगलई खाना होता था।’

राजा राममोहनराय का चेहरा सुन्दर तथा नाक नक्शा तीखा था। वे बंगालियों केहिसाब से मध्यम रंग केथे, उनका माथा ऊंचा, आँखें गहरी तथा जीवंत थीं। उन्होंने छोटी-छोटी मूँछें रखी हुई थीं। उनकेबाल पीछे से लंबे तथा घुघराले थे। राममोहनराय केनिधन केबाद उनकी पगडी डॉ. एस्तले संभालकर रखे हुए थे। वे साठ वर्ष तक संभाले रहे थे। शिवनाथ शास्त्री जब इंग्लैण्ड गए तब उसे वापस लाए। यों उनकेचेहरे पर सदैव तेज रहता था एवं मुद्रा शांत रहती थी। राजा राममोहनराय अपनी पोशाख केबारे में सदैव सचेत रहते थे। बिना शाल और पगडी केवे बाहर जाते ही नहीं थे, घर केअंदर अकसर मुस्लिम ढंग की पोशाख पहनते थे। सभा-समितियों केअतिरिक्त ब्रह्म-समाज केमंदिर में भी सजधज कर जाते थे। उनका मानना था कि भगवान केदरबार में सुन्दर वस्त्रों में जाना चाहिए। वे वेशभूषा केऊपर एक लंबा चोगा पहनते थे, जिसमें एक जामुनी रंग का मखमल का सुनहरी जरी का कढ़ाई वाला था। वे कभी नंगे पैर या स्लीपर में नहीं रहते थे। अंग्रेज की तरह सदा मोजे-जूते पहनते थे यह वृत्तान्त रवीन्द्रनाथ टैगोर केभाई गोगेन्द्रनाथ टैगोर ने अपने पिता से जानकर मि. कोलेट को लिखकर भेजा था और यह उल्लेखनीय है कि कभी भी उन्होंने अपने ब्राह्मणत्व की निशानी यज्ञोपवीत का परित्याग नहीं किया। वे शरीर को भगवान का बहुमूल्य उपहार मानते थे। वे शांत प्रवृत्ति केथे। राजा राममोहनराय का अपने सहयोगियों केसाथ और शिष्यों केसाथ बड़ा ही मधुर सुखद संपर्करहा है। वे अकसर फारसी भाषा में अनुरूप (बरादर) कहकर पुकारते थे उनकेसहयोगी भी उन्हें ‘दीवानजी’ कहते थे। अकसर अपने शिष्यों को वे पारिवारिक और दूसरे मामलों में सलाह दिया करते थे। जिस युग में स्त्रियों केलिए धर्म संस्कार वर्जित थे। उन्होंने अपने घर की बहू-बेटियों को ब्रह्ममंत्र, उपासना, गायत्रीत्रयी आदि सिखाए तथा उन्होंने स्त्रियों को आगे बढ़ने से रोकने वाली प्रथाओं को तोड़ा। उन्होंने राधाप्रसाद की बेटी चन्द्रज्योति केविवाह केअवसर पर बहू यज्ञेश्वरीदेवी से कन्यादान करवाया। उन्होंने छोटे पुत्र रमाप्रसाद की पत्नी द्रवमयी, गोधूलि बेला में सस्वर श्लोक पाठ करती थी। इस प्रकार उन्होंने नारी जाति केलिए सदैव संघर्ष किया। सती प्रथा को निषेध करवाकर नारी जाति केलिए सदैव शुभचिंतक रहे।

2 राजा राममोहन राय की इंग्लैण्ड यात्रा एवं अंतिम चरण

राजा राममोहनराय कलकत्ता बंदरगाह से सोमवार 15 नवम्बर 1830 को अपनी यात्रा केलिए रवाना हुए। अतः राजा राममोहनराय 15 नवम्बर 1830 को अपने दत्तक पुत्र राजाराम, दो नौकर भारतीय नौकर रामरतन मुखोपाध्याय और रामहरिदास और मुस्लिम नौकर शेख बक्शू नामक एक मुसलमान नौकर भी था। वे जहाज पर सवार होकर इंग्लैण्ड केलिए रवाना हुए। राजाराम केबारे में मेरी कारपेन्टर ने अपनी पुस्तक ‘लास्ट डेज इन इंग्लैण्ड ऑफ राजा राममोहनराय’ में लिखा है डॉ. कारपेन्टर को 1835 में लिखे एक पत्र का हवाला देते हुए लिखा था कि राममोहन जिस लडकेको अपने साथ इंग्लैण्ड ले गए थे वह उनका अपना लडका नहीं था। वह सही अर्थों में उनका दत्तकपुत्र भी नहीं बल्कि एक अनाथ लडका था। जिसे राममोहनराय ने अपने संरक्षण में पुत्रवत् पढ़ा-लिखाकर बड़ा किया था। राजा राममोहनराय केजहाज ने जनवरी 1831 को उत्तमाशा अंतरीप केकोने पर केपटाउन बंदरगाह पर लंगर डाला। राममोहनराय कुछ समय केलिए शहर गए थे। जब जहाज पर वापस लौट रहे थे तो जहाज पर चढ़ने वाली सीढ़ी ठीक से बंधी न होने पर खिसक गई जिससे राममोहनराय का पैर फिसलने से काफी चोट लगी। इससे वे अगले कई माह तक लंगडाते रहे। उन्होंने चार माह और 23 दिन बाद इंग्लैण्ड की धरती पर पांव रखे। 8 अप्रैल 1831 को राममोहन लिवरपूल बंदरगाह पर उतरे। राजा राममोहनराय अपने कार्यों से शीघ्र ही लंदन उच्चस्तरीय सामाजिक जीवन का अंग बन गए। उनका राजनैतिक एवं सामाजिक महत्व बढ़ता गया। राममोहनराय जब लंदन केउच्चतम प्रतिष्ठित समाज के सदस्य बन गए थे। अब वे हिन्दुस्तान केमुगल बादशाह द्वारा नियुक्त राजदूत एलची की भूमिका भी निभा रहे थे। कुछ लोगों की सलाह से वेरीजेन्ट पार्कजैसे भव्य इलाकेमें एक शानदार कोठी पर रहने लगे और अंत में उनकेलंदन प्रवास के बाकी दिन हेयर बंधुओं के मकान पर ही बीते।

राजा राममोहनराय जब फ्रांस गए थे। तब उस समय हेयरभ्राताओं में से एक भाई उनकेसाथ थे। राजा राममोहन संभवतया सितम्बर 1833 के पहले हफ्ते में लंदन से ब्रिस्टल पहुँचे।

राजा राममोहनराय को यहाँ आकर काफी सुकून मिला। लंदन के भीड़-भाड़ और हलचल भरी दौड़धूप की अपेक्षा ब्रिस्टल का शांत-शांत वातावरण उन्हें सुखद लगा। उधर उनका स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं था एवं राजा राममोहनराय को काफी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। डॉ. कारपेन्टर ने राजा राममोहन राय के जीवन का अंतिम दिनों का बहुत ही सुन्दर विवरण अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में दिया है। मिस कारपेन्टर राजा राममोहन के कृतित्व से इतनी प्रभावित थी कि उन्होंने अपने जीवन काल में तीन-चार बार भारत की यात्रा की थी।

राजा राममोहनराय के वर्षों के कठिन परिश्रम एवं विदेश में आकर आर्थिक कठिनाइयों की चिंता ने उनको थका दिया एवं इसका प्रभाव उनके स्वस्थ शरीर पर पड़ने लगा। लंदन में वे अक्सर थकान महसूस करने लगे। वे कई बार अस्वस्थ भी हुए। 19 सितम्बर 1833 को उन्हें ज्वर का आक्रमण हुआ। 23 सितम्बर 1833 को स्पष्ट हो गया कि वे सिर से मुख्य रूप से पीड़ित थे। वे सिरदर्द से बेहाल थे। बाद में पीड़ा ने विकार रूप ले लिया। केवल वे कभी-कभी (ओउम) शब्द का उच्चारण करते थे। धीरे-धीरे उनकी चेतना एवं वाक शक्ति का लोप होता गया।

राममोहनराय के चिकित्सक डॉ. एस्लिन ने उनकी बीमारी के अंतिम दिनों का विवरण अपनी व्यक्तिगत डायरी में लिखा था। मेरी कारपेन्टर ने अपनी पुस्तक में राममोहन के जीवन के अंतिम और महत्वपूर्ण दिनों का विवरण डॉ. एस्लिन की डायरी से उद्धृत किया गया है। इससे राजा राममोहनराय के बीमारी, अंतिम समय का विवरण ज्ञात होता है। वे लगातार गंभीर रूप से 9 सितम्बर 1833 से अस्वस्थ रहे।

यहां उनके दुखद निधन के दिवस का विवरण प्रस्तुत है-

27 सितम्बर 1833 बुधवार-हर घड़ी राजा की हालत बिगड़ती जा रही थी। सांस तेज और रूकावट के साथ चल रही है। नब्ब बहुत ही कमजोर। उनका दाहिना बाजू बराबर हिल रहा है। बायां मृत्यु के कुछ समय पहले हिला था। नाड़ी पकड़ पाना मुश्किल हो रहा था। आज की रात चारों ओर सुन्दर चांदनी छिटकी है। श्रीहेयर, मिसकिडन और मैं (डॉ. एस्लिन) खिडकी के बाहर आधी रात में डूबे गांव का सन्नाटा भरा शांत दृश्य देखते रहे दूसरी ओर एक असाधारण व्यक्ति की मृत्यु हो रही थी। इस क्षण को मैं कभी भी भूल नहीं पाऊंगा। मिसहेयर इस समय हताश व अविभूत थी। वे इतने दिनों तक राजा के पास रहकर उनकी सेवा करती रही। लेकिन इस समय पास ठहरने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी। पूरी तरह निराश हो कुर्सी पर पास ही बैठी सुबकती रही। रात के डेढ़ बजे थे। हमारे मित्र के जीवन का दीप बुझता जा रहा था। उन्होंने दो बजकर पच्चीस मिनट पर अपनी अंतिम सांस छोड़ी। मैं और मि. हेयर ब्रिस्टल जाकर उनके शारीरिक जांच का इंतजाम करा दिया। डॉ. कारपेन्टर सुबह हमारे यहां पहुंचे। हम सब शव के पास बैठे रहे उनका शरीर इस अवस्था में भी भव्य लग रहा था। घटना ने हमको अभिभूत कर दिया।

27 सितम्बर 1833 को आधी रात के बाद 2 बजकर 25 मिनट पर एक महान भारतीय आत्मा की जन्मभूमि से बहुत दूर विदेश में अपनी अंतिम सांस ली। दूसरे दिन डॉ. एस्लिन ने एवं उनके दूसरे डॉक्टर मित्रों ने शव की पूरी तरह जांच पड़ताल की। मृत्यु का कारण तेज बुखार एवं मस्तिष्क का प्रदाह बताया गया। इसका कारण संभवतया राममोहनराय की अधिक कठिनाइयां थी।

मि. एस्लिन ने आगे डायरी में लिखा -मृत्यु के समय और कॉफिन में शव रखते समय भी उनके कंधे पर ब्राह्मणोचित जनेऊ लटक रहा था। उसे हटाया नहीं गया। राममोहन के नौकरों को इस घटना के साक्षी के रूप में रखा गया। स्टेपलटनग्रीव में केवल उन लोगों को बुलाया गया जो राममोहन को जानते थे।

18 अक्टूबर 1833 को उस महान श्रद्धेय व्यक्ति को समाधिस्थ कर दिया गया। यह अंतिम संस्कार शांत, सौम्य और गंभीर था। जिसमें इनके मित्र उपस्थित थे। राममोहन की अकस्मात मृत्यु के समाचार ने उस काल की पत्र-पत्रिकाओं के समाचार एवं स्तम्भों में महत्वपूर्ण प्रमुख स्थान पाया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लेखादि प्रकाशित हुए। इंग्लैण्ड तथा आयरलैण्ड के अनेक चर्चों के उपासना मंच से राममोहनराय को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। राजा राममोहनराय की मृत्यु के लगभग सात माह बाद 5 अप्रैल 1834 को कलकत्ता के टाउनहाल में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। इस सभा का सभापतित्व सर जानपीटर ग्रांट ने किया। इस सभा में राममोहन के प्रशंसक भारतीय तथा यूरोपीय नागरिक उपस्थित हुए। दस वर्ष बाद जब उनके मित्र द्वारकानाथ ठाकुर इंग्लैण्ड गए तो उनके अनुसार 29 मई 1843 को राममोहन के पवित्र अवशेषों से पवित्र ताबूत स्टेपलटनग्रीव के उद्यान से हटाकर ब्रिस्टल के निकट आर्नसवेल के समाधि क्षेत्र में एक अलग स्थान पर समाधिस्थ किया और उनके मित्र ने ही उस स्थान पर एक

सुन्दर स्मारक बनवा दिया। यह स्थान आज भी भारतीय के लिए एक तीर्थ है। वहां पर उन पर एक प्रस्तर फलक लगाया गया। जिस पर अंग्रेजी में सुन्दर पंक्तियां वर्णित की गई हैं।

एड्डीने मूर केशवर्द्धों में - 'इस महान नेता के आने से, पूर्व और पश्चिम में संबंध हुआ है। यह ज्ञात हुआ है कि स्थान की दूरी और भिन्नता के बावजूद भारतीयता के प्रति रूप राममोहनराय अपने अमेरिकन भाई के निकट आत्मीय हैं। उनका यह विश्वास था कि यदि भारतवासी पुरातन औपनिषदिक धर्म और उपासना प्रणाली के आधार पर अपनी आस्थाओं का निर्माण करें और पश्चिम के उदार मानवतावाद तथा बहुभावना के प्रति आस्था उत्पन्न करें तो वे समानता तथा बहुभावना के प्रति आस्था उत्पन्न करें तो वे स्वदेश के पुनरुत्थान के स्वप्न को पूरा कर सकेंगे।'

यों राममोहनराय ने जब विलायत जाने की ठानी उन दिनों समुद्र यात्रा करना विशेषकर ब्राह्मणों के लिए धर्मविरुद्ध कार्य था। इतिहास साक्षी है कि राममोहनराय के कार्य आज भी भारतवासियों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उनके समाज सुधार कार्यों ने भारत को नवीन दिशा दी है। वे ऐसे युगपुरुष हैं जिन्होंने भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपने कार्यों से प्रसिद्धि पाई। वे भारतीय नवजागरण के जनक हैं। उनकी मृत्यु शताब्दिकी के अवसर पर कलकत्ता में सभा हुई। उस सभा में महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक भाषण दिया था। जिसकी उक्त पंक्ति श्रद्धांजलिस्वरूप स्मरणीय है-

‘हे राम मोहन आज एक शताब्दी बाद, सारा देश तुम्हें प्रणाम कर रहा है। मृत्यु का आवरण भेदकर अपना अक्षयदान देते जाओ, जरा-जीर्ण में जगाओ प्राणों का स्पंदन, अपनी आत्मा के स्पर्श-मणि से व्याप्त मूढता दूर करो, अभिनव शक्ति का करो संचार।’

References

- [1] कोलेट सोफिया डाबसन. द लाइफ एण्ड लेटर्स ऑफ राजा राममोहन राय. संपा. दिलीप कुमार विश्वास, प्रभातचन्द्र गांगुली. कलकत्ता: साधारण ब्रह्मसमाज; 1962 (प्रथम संस्करण 1900).
- [2] दासगुप्ता बी.एन. द लाइफ एण्ड राइटिंग्स ऑफ राजा राममोहन राय. दिल्ली; 1980.
- [3] कारपेंटर मेरी. द लास्ट डेज इन इंग्लैण्ड ऑफ द राजा राममोहन राय. लंदन; 1866 (कलकत्ता; 1915).
- [4] मूर एड्डीने. राममोहन राय एण्ड अमेरिका. 1942.
- [5] चटर्जी नगेन्द्रनाथ. राममोहन राय के जीवन चरित. कलकत्ता; 1881. पांचवां संस्करण, इण्डियन प्रेस; 1928. नया मुद्रण, कलकत्ता: देज पब्लिक; 1972.
- [6] बागची मणि. राममोहन (बंगला). 1958.
- [7] शास्त्री शिवनाथ. हिस्ट्री ऑफ द ब्रह्मो समाज. कलकत्ता: साधारण ब्रह्मसमाज.
- [8] दस्त. रकेजी. राममोहन राय: जीवन एवं दर्शन.